विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और केरल हिन्दी साहित्य सेवा संगठन, तिरुवनन्तपुरम के तत्वाधान द्वारा प्रायोजित द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

UGC Sponsored Two Day National Seminar in Collaboration with Keral Hindi Sahithya Seva Sansthan, Thiruvananthapuram

विषय क्षेत्र :

उत्तराधुनिक हिन्दी साहित्य में सामाजिक चेतना

(Social Consciousness in Postmodern Hindi Literature)

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग एवं शोध केन्द्र
एन.एस.एस हिन्दू कॉलेज पेरुन्ना, चंगनाश्शेरी
कोट्टयम्, केरल - ६८६१०२
११,१२ अगस्त २०१५

P.G. and Research Department of Hindi
N.S.S. Hindu College, Perunna
Changanacherry, Kottayam, Kerala - 686102
11, 12 August 2015

प्रकाशक
डॉ. ज्योति बालकृष्णन
विभागाध्यक्ष, हिन्दी स्नातकोत्तर एवं शोध विभाग,
एन.एस.एस. हिन्दू कॉलेज, चंगनाश्शेरी

मुख्य संपादक
डॉ. गीता
प्राचार्य, एन.एस.एस. हिन्दू कॉलेज, चंगनाश्शेरी

संपादक
डॉ. सीमा चन्द्रन,
सहायक प्रोफसर, हिन्दी स्नातकोत्तर एवं शोध विभाग,
एन.एस.एस. हिन्दू कॉलेज, चंगनाश्शेरी

मूल्य : Rs. 250

शब्द सज्जा एवं मुद्रण : अमृता प्रेस, चंगनाश्शेरी

प्रथम संस्करण : 2015 आगस्त

(c) प्रकाशकाधीन

ISBN - 978-93-5235-617-1

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

1. **उत्तराधुनिक दौर के उपन्यास में सामाजिक चेतना,** डॉ. पी. रवि, विभाग अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालडी 1-4

2. **उत्तराधुनिक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी कथा साहित्य का विश्लेषण**
डॉ. माथ्यू एब्रहाम, असोसियेट प्रोफसर, हिन्दी विभाग, एस.बी. कालेज, चंगनाशेरी 5-8

3. **उत्तराधुनिक समीक्षा का सामाजिक संदर्भ, डॉ. के. श्रीलता,**
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, पन्मना 9-13

4. **आधुनिकताओं का द्वन्द्व, हिन्दी साहित्य और सामाजिकता।**
डॉ. प्रमोद कुमार तिवारी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, केन्द्रीय विश्व विद्यालय, गुजरात। 14-19

5. **नयी स्त्री चेतना का उद्घोष : प्रभा खेतान का रचना कर्म**
डॉ. रॉय जोसफ, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, एस.बी. कालेज, चंगनाशेरी, केरल 20-23

6. **'स्त्री मेरे भीतर' - स्त्रीपक्षीय उत्तराधुनिक पुरुष दृष्टि**
डॉ.जिजी टी.जोसफ, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, कैथोलिकेट कॉलेज, पत्तनंतिट्टा 24-28

7. **उत्तर आधुनिक कविताओं में स्त्री विमर्श, डॉ. रोसी पी. वर्गीस,**
असिस्टेंड प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कैथोलिकेट कॉलेज, पत्तनम्तिट्टा 29-32

8. **आधुनिकरण से उत्पन्न विभ्रांत आधुनिक बोध-**
मनोहर श्याम जोशी के उपन्यास के संदर्भ में
डॉ.शेर्ली बेबी, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कैथोलिकेट कॉलेज,पत्तनंतिट्टा 33-38

9. **समकालीन कविता में गाँव ।**
डॉ.श्रीलता पी., असोसियेट प्रोफसर, हिन्दी विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, एट्टुमानूर (क्षेत्रीय केन्द्र), कोट्टयम 39-45

10. **विज्ञापनवादी संस्कृति में व्याप्त भ्रष्टाचार का उत्तराधुनिक दस्तावेज-एक ज़मीन अपनी**
डॉ.सनु तोमस, असिस्टेन्ट प्रोफसर, हिन्दी विभाग, कैथोलिकेट कॉलेज, पत्तनंतिट्टा 46-50

11. **आधुनिकोत्तर हिन्दी कहानी में सामाजिक चेतना**
उभरती रचनाकार अनु सिंह चौधरी की कहानी में अभिव्यक्त सामाजिक चेतना
डॉ. सूसन अलक्स, हिन्दी विभाग, सरकारी कॉलेज, नाट्टकम, कोट्टयम 51-54

12. **उदय प्रकाश की कहानियों में उत्तराधुनिकता, डॉ. आषा पी.के.,**
असिस्टेन्ट प्रोफसर, हिन्दी विभाग, एन.एस.एस. हिन्दू कॉलेज, चंगनाशेरि 55-57

13. **उत्तराधुनिक कविता में सामाजिक संकट के परिदृश्य**
डॉ. प्रिया ए., असिस्टेंट प्रोफसर, हिन्दी विभाग, के.जी. कॉलेज, पाम्पाडी 58-62

समकालीन कविता में गाँव

डॉ. श्रीलता पी., असोसियेट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्व विद्यालय, एट्टुमानूर

आधुनिकता के अंधानुकरण की वजह हमारे मूल्यों एवं संस्कृति को नकारने का जो प्रयास हमने शुरू किया आज उसके परिणामस्वरूप ग्रामीण संस्कृति मिट रही है। विकास की नयी परियोजनाएँ तथा नये अर्थ तंत्र दोनों ने देहाती लोगों पर कितना दबाव डाला है इसकी व्याख्या किसान आत्महत्यायें कर रही हैं। देहाती आज जलहीन, ज़मीनहीन, खेतीहीन बन गए हैं। अब अपनी व्यथा कथा सुनाने के लिए भी वे आक्त हो गये हैं क्योंकि संस्कृति से जो ऊर्जा मनुष्य को प्राप्त होती है उसके नष्ट होने के कारण उनका मन आज असंतुलित है। वे अपना आत्मबल खोने लगे हैं। हमारी संस्कृति की सबसे छोटी इकाई तथा साक्त आधार गाँव वैश्वीकरण के हादसे से भी मुक्त नहीं रह सका। एक ओर नयी विकास योजनाओं की कीमत गाँव को चुकानी पड़ी और दूसरी ओर नव उदारवादी अर्थ तंत्र ने वहाँ के श्रमजीवियों को हाशियेकृत किया। परंपरा और लोक में सुरक्षित संस्कृति की जड़ें ऐसे में हिलना ताज्जुब की बात नहीं। हकीकत यह है कि आज़ाद भारत में हरित क्रांति ने किसानों को अपने खेतों से दरकिनार कर दिया। एक ओर उसने उत्पादन बढाया तो दूसरी ओर छोटे किसानों को भूमिहीन बना दिया। खेतीबारी से जुड़नेवाली ग्रामीण संस्कृति का नष्ट होना इसकी प्रतिक्रिया रही। आज पूरे भारत में कृषि के क्षेत्र में जैव तकनीकी (Biotechnology) पर आधारित कृषि प्रणाली को अपनाया जा रहा है, G.M. कृषि को बढावा दे रहा है। इससे गाँव का अपना वजूद ही नष्ट हो रहा है। कृषि रीति, उत्पादन, बीज, खाद सब M.N.C के अनुसार किये जा रहे हैं। बाज़ार केन्द्रित कृषि प्रणाली में ग्रामीण किसान अपनी परंपरागत कृषि रीतियों को अपना नहीं सकता बल्कि M.N.C. के आवश्यकतानुसार Biotech कंपनियों द्वारा निर्धारित तत्वों का पालन करता रहता है। मज़े की बात यह है कि इससे श्रमिक-किसानों का पेट नहीं भरता समाज के संपन्न वर्ग और M.N.C. का हाथ ही भरता जा रहा है।

ग्रामीण किसान पहले तो अपनी ज़मीन जानता था, बीज जानता था कृषि से उसका आत्मीय सरोकार भी था। वह अपनी मिट्टी की नस जाननेवाला रहा और उसे पता था कि मिट्टी क्या चाहती है। लेकिन अब किसी के कहने के अनुसार उसे बीज बोना पड़ता है, जिस पर, किसान का नहीं, उसका एकाधिकार है, 'पेटेंट' है। यह अपनी मिट्टी से किसान के संबन्ध पर सवाल है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों को आकर्षित करने केलिए सरकार द्वारा अपजाऊ ज़मीन दी जा रही है। फलत: गाँववालों को अपनी मिट्टी से पलायन करना भी पड़ता है। बचे खुचे लोग जो कृषि पर निर्भर रहे उन्हें आत्महत्या करना पड़ रहा